International Conference on Social Science & Humanities Trends
International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
April 2025
ISSN: 2584-2455

विकसित भारत भारत में महिलाओं का योगदान

प्रो. शैफाली सुमन
समाजशास्त्र विभाग
महाराणा प्रताप राजकीय स्ना. महाविद्यालय, सिकंदराराऊ
हाथरस (उ.प्र.)

विकसित भारत सशक्त, समृद्ध भारत; यह सिर्फ सरकार का ही नहीं जन-जन का स्वप्न है जिसे 2047 अर्थात् भारत की स्वतंत्रता वर्षगांठ तक पूर्ण प्राप्त करने का लक्ष्य सरकार ने रखा है। पूर्ण विकसित भारत की संकल्पना में भारत समानता आधारित लोकतांत्रिक पथ पर सवार होकर समाज के सभी वर्गों को रहन सहन का उच्च स्तर, सुख शांति, सुशासन, चिकित्सा सुविधा, उत्तम स्वास्थ्य, गुणवत्तापूर्ण मूल्य आधारित व रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करना, देश का इंफ्रास्ट्रक्चर सुदृढ़ करना, कृषि व्यवस्था की उन्नति, घर-घर में ऊर्जा, जनसंचार डिजिटल उपकरणों का प्रयोग आदि को उपलब्ध कराना है। मजबूत, नवीन तकनीकयुक्त सैन्यबल, पूर्ण संप्रभुता, हानिरहित विदेश नीति, आयात-निर्यात, समस्त युवाओं को रोजगार, नवाचार, अंतरिक्ष विज्ञान, समुद्र विज्ञान, वन्य जीवन, पर्यावरण सुरक्षा जैसे वैज्ञानिक विषयों को बढ़ावा देना, गरीबी शून्य करना, जनसंख्या वृद्धि को स्थिर करना आदि लक्ष्यों को प्राप्त करना है। इसके साथ ही राष्ट्र की प्रगति के लिए क्षेत्रवाद, धर्मवाद, भाषावाद के लड़ाई झगड़ों को कम करना, विभिन्न भाषाओं के विकास को बढ़ावा देना, महिलाओं की सहभागिता, कार्यबल में नेतृत्व क्षमता को विकसित व उन्नत करना, अल्पसंख्यकों के हितों को वरीयता देना, सभी धर्मों, वर्गों, संस्कृतियों के लोगों को जीवन में आगे बढ़ने उन्नति करने के समान अवसर सबका विकास को प्राप्त करना होगा। तभी भारत 2047 तक पूर्ण रूप से विकसित भारत की ओर होगा।

विकसित भारत@2047 का अर्थ

भारत एक विकासशील देश है जहाँ सतत विकास की प्रक्रिया चल रही है। पूर्ण विकास अथवा सौ प्रतिशत साक्षरता, साक्षरता विज्ञान प्रौद्योगिकी, IT व ज्ञानवान समाज, कुरीति मुक्त देश, स्त्री पुरुष समानता, निर्धनता व बेरोजगारी की समाप्ति, सबका समान विकास, प्रदूषणरहित भारत भूमि यही पथ हमें 2047 तक भारत की स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ तक स्थापित हो।

शाब्दिक दृष्टि से देखें तो भारत ने स्वतंत्रता की शताब्दी 2047 तक स्वयं को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का संकल्प लिया है। विकसित भारत @2047 का उद्देश्य भारत को लगभग 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था, $20,000-25,000 प्रति व्यक्ति आय, न्यूनतम गरीबी और उच्च जीवन स्तर, उच्च तकनीक, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, व्यापार, वाणिज्य वाले राष्ट्र में परिवर्तित करना है। जिसमें GDP $30 ट्रिलियन, प्रति व्यक्ति आय विकसित देशों के समान कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी 50-80%, कुल निर्यात $10 ट्रिलियन, ऊर्जा के क्षेत्र में 1500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता विकसित करने को अनिवार्य मानकों के रूप में देखा गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं के राष्ट्र के विकास में अब तक किए गए योगदान एवं विकसित भारत @2047 तक सशक्त महिला समृद्ध भारत विकसित राष्ट्र को चरितार्थ हेतु सरकार की महिला उत्थान की योजनाओं एवं महिलाओं के देश के विकास में किए गए योगदान व गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है।

महिलाएं समाज और राष्ट्र की धुरी मानी जाती हैं। उनके परिवार को दिए गए समय, कार्य श्रम, समर्पण, निष्ठा से समाज की प्रगति सम्भव होती है। परिवार में माँ और पत्नी की भूमिका को निभाते हुए पुरुषों को कर्मशील बनाने में योगदान करती हैं। वहीं दूसरी ओर संस्कारों और मूल्यों को अपने बालकों में समाहित कर राष्ट्र की प्रगति में सहयोग करती हैं। महिलाएं सृष्टि के आरंभ से ही किसी ना किसी रूप में समाज को अपना अमूल्य योगदान करती आयी हैं - चाहे वह घर की चारदीवारी हो या धार्मिक, सामाजिक कल्याण के क्षेत्र हों। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाओं ने अपनी कर्मठता का परचम ना लहराया हो। किसी भी राष्ट्र की प्रगति में आधी आबादी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हस्तशिल्प, घरेलू कुटीर उद्योगों से लेकर कॉर्पोरेट जगत, नौकरशाही आदि में बढ़-चढ़ कर भागीदारी कर रही हैं।

विकसित भारत @2047 के निर्माण में महिलाओं की अहम भूमिका है जिसको वे GDP में लगभग 18% योगदान, 48% कृषि भागीदारी और स्टार्टअप्स में 25% हिस्सेदारी के साथ देश के आर्थिक विकास में सशक्त भूमिका निभा रही हैं। मुद्रा योजना, कौशल विकास और नारी उद्यमिता के माध्यम से नारी स्वयं भी सशक्त हो रही है। महिलाओं के द्वारा विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में हम उनके कार्यबल को विभिन्न आयामों द्वारा परख सकते हैं।

आर्थिक क्षेत्र में योगदान

आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी 23.2 से बढ़कर 41.7 प्रतिशत तक हुई है। इसी प्रकार महिला उद्यमी लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSME) का 25% हिस्सा संभालती है। कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी 48% है। वे बुआई, कटाई, पशुपालन और कृषि प्रसंस्करण जैसे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसी प्रकार कृषि आधारित उद्यमों जैसे डेयरी, मधुमक्खी पालन और मछली पालन में कार्य बल देती हैं। महिलाओं के आर्थिक क्षेत्र में योगदान से राष्ट्रीय आय और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि होती है। वे गरीबी कम करने में भी योगदान करती हैं।

सेवा क्षेत्र में योगदान

सेवा क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और वित्तीय सेवाओं जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं। AISHE 2021-22 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लगभग 6.94 लाख महिला शिक्षक कार्यरत हैं जो कुल संकाय का 43.4% है। 2014-15 के बाद से महिला शिक्षकों की संख्या में 22% की वृद्धि हुई है जिससे प्रति 100 पुरुष शिक्षकों पर 77 महिला शिक्षक हैं। इसी प्रकार उच्च माध्यमिक और माध्यमिक स्तरों पर महिला शिक्षकों की भागीदारी 43% है। वर्ष 2023-24 के UDISE आंकड़ों के अनुसार समग्र स्कूल शिक्षा प्रणाली में महिला शिक्षकों की संख्या बढ़ी है। इसी प्रकार केरल में 78%, तमिलनाडु में 67% और पंजाब में 64%, राज्यों में सरकारी स्कूलों में महिला शिक्षकों की संख्या अधिक है। दूसरी ओर राजस्थान में 41% और

झारखंड में 39.50% है जो राष्ट्रीय औसत से कम है। इसी प्रकार भारत में समग्र स्कूल शिक्षा (Pre-Primary to Higher Secondary) में महिला शिक्षकों की भागीदारी 2024-25 में लगभग 54% (5.05 million) रही है जो पुरुषों से अधिक है। यद्यपि माध्यमिक (Secondary) और उच्चतर माध्यमिक (Higher Secondary) स्तरों पर स्थिति अलग है जहाँ लगभग 57% पुरुष और 43% महिला शिक्षक हैं।

ग्रामीण क्षेत्र में योगदान

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ कृषि अर्थव्यवस्था में महिलाएँ अधिक संख्या में कार्य करती हैं। कृषि कार्यबल में लगभग 80% और कुल कृषि उत्पादन में 55-66% योगदान देती हैं। वे न केवल फसल उत्पादन और पशुपालन (डेयरी में 94% भागीदारी) में सक्रिय हैं, वह खेती के लगभग सभी कार्यों- बीज बोने से लेकर कटाई तक सभी में गतिशील हैं। इसके अतिरिक्त वे छोटे-मोटे व्यवसाय, हस्तशिल्प और स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से सूक्ष्म उद्यम चलाकर परिवार को सशक्त बनाती हैं। महिलाएँ ग्रामीण पंचायतों सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। आशा कार्यकर्ता के रूप में ग्रामीण गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की देखभाल में योगदान करती हैं।

वार्षिक आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) रिपोर्ट 2022-23 के अनुसार, कृषि क्षेत्र में महिला श्रमिकों का अनुमानित प्रतिशत वितरण सबसे अधिक था, यानी 64.3% जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में 76.2% और शहरी क्षेत्र में 11.7% सम्मिलित है। यह कृषि परिदृश्य में महिलाओं के योगदान को रेखांकित करता है।

चिकित्सा क्षेत्र में योगदान

चिकित्सा के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान उल्लेखनीय है। भारत में कुल पंजीकृत डॉक्टरों में से 29% महिला डॉक्टर, 80% से अधिक नर्स, और लगभग 100% आशा कार्यकर्ता महिलाएँ हैं जो स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करती हैं। दाइयों की संख्या भी अधिकतम 30% है। महिला डॉक्टर सबसे अधिक स्त्री रोग और पैथोलॉजी में अधिक हैं। महिलाएँ कोविड महामारी के दौरान अधिकतम सक्रिय रही हैं। भारत और दुनिया भर में महिला चिकित्सा कर्मियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर लाखों लोगों की जान बचायी है।

सेना अथवा सुरक्षा क्षेत्र में योगदान

भारतीय महिलाओं की सशस्त्र बलों (थल सेना, नौ सेना, वायु सेना) में महिलाओं की कुल भागीदारी लगभग 4% है। सबसे अधिक प्रतिशत भारतीय वायु सेना (लगभग 13-14%) में है। इसके बाद नौसेना और फिर थल सेना का स्थान आता है। अग्निवीर योजना के अंतर्गत महिलाओं की भर्ती में बढ़ोतरी हुई है। भारतीय वायु सेना (IAF) में 13.69%, सबसे अधिक, भारतीय नौसेना (Indian Navy) में 6% तथा भारतीय थल सेना (Indian Army) में 3.81% है। इसी प्रकार सशस्त्र बल चिकित्सा सेवाओं में महिला भागीदारी 21% है। इसके अतिरिक्त आर्मी एयर डिफेंस, सिग्नल्स इंजीनियर्स, आर्मी एविएशन, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड मैकेनिकल इंजीनियर्स, आर्मी सर्विस कॉर्प्स, ऑर्डनेंस कॉर्प्स, इंटेलिजेंस कॉर्प्स तथा जज एडवोकेट जनरल (JAG) ब्रांच आदि में सक्रिय

हैं। नौसेना में नाविकों के रूप में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने को 20% पद आरक्षित हैं।

विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में महिलाएँ

विज्ञान और तकनीकी (STEM) के क्षेत्र में महिलाओं ने मौलिक खोजों, अंतरिक्ष अन्वेषण और स्वास्थ्य सेवाओं में महत्वपूर्ण योगदान किया है। मैरी क्यूरी से लेकर कल्पना चावला और महिला वैज्ञानिकों ने रूढ़ियों को तोड़ते हुए जैव प्रौद्योगिकी और भौतिकी में नेतृत्व किया है। भारत में महिला शोधकर्ताओं की हिस्सेदारी अब 18-28% हो गई है। नासा अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला, भारत की मिसाइल महिला टेसी थॉमस, कैंसर रोधी दवाएं विकसित करने में असीमा चटर्जी, मैरी क्यूरी रेडियम/पोलोनियम की खोज, डोरोथी क्रोफुट इन्होंने हॉजकिन, विटामिन B12 संरचना की खोज की, आइरीन जूलियट क्यूरी, जानकी अम्माल- गन्ने की हाइब्रिड प्रजाति की खोज कर उल्लेख नीय कार्य करने वाली महिलाएं हैं।

इसी प्रकार अन्ना मणि सौर विकिरण और ओजोन परत के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रसिद्ध मौसम वैज्ञानिक हैं।

विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों की भागीदारी बढ़ाने व उनको बढ़ावा देने के लिए लड़कियों का अंतरराष्ट्रीय विज्ञान दिवस प्रतिवर्ष 11 फरवरी को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित इस दिवस का उद्देश्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी की दुनिया में बालिकाओं की उच्च सहभागिता और लैंगिक अंतर को तोड़ना है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा दिया गया आदर्श वाक्य है - नवाचार करें। प्रदर्शन करें। उन्नत करें। आगे बढ़ें। बनाए रखें (विचार)। इसका उद्देश्य सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को रेखांकित करना है।

देश के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु सरकार ने महिला आर्थिक सशक्तिकरण की योजनाएं लागू की हैं जो इस प्रकार हैं -

महिला आर्थिक सशक्तिकरण की प्रमुख योजनाएं

1- स्टैंड अप इंडिया (Stand up India): इसके अंतर्गत महिलाओं को 10 दस लाख से 1 करोड़ रुपये तक का ऋण प्रदान किया जाता है।

2- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY): महिला उद्यमियों को सांपाश्विक मुक्त (Collateral Free) ऋण प्रदान किया जाता है, जिसमें 68% लाभार्थी महिलाएं हैं।

3- दीनदयाल अंत्योदय योजना - (DAY-NRLM): ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से संगठित कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा रहा है।

4- नमो ड्रोन दीदी - महिलाओं को ड्रोन तकनीक के माध्यम से कृषि क्षेत्र में स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना है।

5- प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना - इसके अंतर्गत महिला रेहड़ी-पटरी वालों को सशक्त बनाना है।

6- मिशन शक्ति - महिलाओं को सुरक्षा और पुनर्वास के साथ साथ 'पालना' योजना के माध्यम से बच्चों के लिए क्रेच सुविधा (Day care) प्रदान करना है।

7- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना - इसके अंतर्गत कौशल विकास के द्वारा रोजगार की संभावनाओं को बढ़ावा देना है।

8- महिला उद्यमी योजना (बिहार) - यह योजना बिहार राज्य में चल रही है। जिसमें गरीब महिलाओं को 10 लाख की वित्तीय सहायता दी जाती है जिसमें 50% अनुदान (5 लाख रु.) सम्मिलित है।

भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही इन योजनाओं का उद्देश्य कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना है, साथ ही लैंगिक समानता का प्रयास, महिला नेतृत्व वाले क्षेत्रों की पहचान कर विकास कार्य को बढ़ावा देना और @2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नीति आयोग (2023). **विकसित भारत @2047: भारत के लिए रणनीति और विज़न**. भारत सरकार.
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2024). **वार्षिक रिपोर्ट 2023-24**. भारत सरकार.
3. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वियन मंत्रालय (2023). **भारत में महिला और पुरुष 2022**. भारत सरकार.
4. श्रम ब्यूरो (2023). **वार्षिक आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) रिपोर्ट 2022-23**. श्रम और रोजगार मंत्रालय.
5. शिक्षा मंत्रालय (2022). **अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE) 2021-22**. भारत सरकार.
6. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (2022). **राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) 2019-21**. भारत सरकार.
7. अग्रवाल, बी. (2018). **अ फील्ड ऑफ वन्स ओन: दक्षिण एशिया में लैंगिक और भूमि अधिकार**. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
8. सेन, ए. (2001). **विकास ही स्वतंत्रता है (Development as Freedom)**. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. मजमूनदार, वी. (2014). **एजुकेशन एंड नेशनल डेवलपमेंट: ए सोशियोलॉजिकल पर्सपेक्टिव**. रावत पब्लिकेशन्स.
10. देसाई, एन., एवं ठाकर, एम. (2001). **भारत में महिला अध्ययन (Women in Indian Society)**. नेशनल बुक ट्रस्ट.
11. चड्ढा, जी. के. (2012). **भारत के कृषि क्षेत्र में महिला कार्यबल: चुनौतियाँ और अवसर**. विकास अध्ययन संस्थान.
12. खन्ना, ए. (2021). **डिजिटल इंडिया और महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन**. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च*, 62(3), 145-160.
13. गुप्ता, एस., एवं शर्मा, आर. (2024). **आर्थिक विकास में एमएसएमई और महिला उद्यमियों की भूमिका**. *जर्नल ऑफ बिजनेस एंड इकोनॉमिक्स*, 12(1), 88-102.
14. सिंह, के. (2022). **भारतीय सशस्त्र बलों में महिलाओं की भागीदारी: एक ऐतिहासिक विश्लेषण**. *डिफेंस स्टडीज जर्नल*, 15(2), 210-225.

15. वर्मा, पी. (2023). **ग्रामीण भारत में स्वयं सहायता समूहों (SHGs) का प्रभाव**. *ग्रामीण विकास पत्रिका*, 40(4), 55-70.
16. रेड्डी, वी. (2020). **STEM शिक्षा में भारतीय महिलाएँ: रुझान और भविष्य की संभावनाएं**. *एजुकेशनल टेक्नोलॉजी रिव्यू*, 8(2), 12-29.
17. विश्व बैंक (2023). **महिला, व्यवसाय और कानून 2023**. वाशिंगटन, डीसी.
18. यूएन विमेन (2022). **सतत विकास लक्ष्यों में प्रगति: जेंडर स्नैपशॉट 2022**. संयुक्त राष्ट्र.
19. विश्व आर्थिक मंच (2023). **ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2023**. जिनेवा.
20. यूनेस्को (2021). **विज्ञान में महिलाएँ: भारत में वर्तमान स्थिति**. यूनेस्को प्रकाशन.